पंच परमेश्वर

सारांश

अलगू चौधरी और जुम्मन शेख दोनों में गाढी मित्रता थी साझे में खेती करते थे दोनों लेनदेन भी साझा में करते थे । दोनों को एक दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन शेख की एक खाला थी। उस खाला की अपनी कोई संबंधी नहीं थे। जुम्मन ने खाला को समझा-बुझाकर खाला की जमीन को अपने नाम में करवा लिया। जमीन की रजिस्ट्री के बाद जुम्मन खाला से बुरा बर्ताव करने लगा। खाला पंचायत बुलाना चाहती थी और न् चाहती थी। खाला के लिए जब पंचायत बैठी तो खाला ने अलगू चौधरी जो जुम्मन का खास मित्र था उसे सरपंच चुना। अलगू चौधरी ने जुम्मन के खिलाफ राय सुना कर खाला को न्याय दिलाई। तभी से जुम्मन अलगू चौधरी से बदला लेने की भाव में अवसर खोजने लगा। एक बार अलगू चौधरी ने बटेसर से दो बैल खरीद कर लाया। कुछ दिनों के बाद दोनों बैलों में से एक बैल मर गया। अलगू चौधरी ने अपने एक बैल समझू साहू को बेच दिया। साहू ने बेल के साथ अमानवीय अत्याचार करता । उसके सारे पानी का ठीक से प्रबंध नहीं करता और उससे कठोर परिश्रम करवाता रहता था। 1 दिन बेल चौथी खेप में ही उलट कर गिर गया और वही अपना दम तोड़ दिया।अलगू चौधरी ने जब समझू साहू के पास बैल के लिए पैसा मांगने गया तो साहू ने बीमार बैल था कहकर पैसा देने से इनकार कर दिया। साहू ने पंचायत बुलाई। पंचायत में साहू ने जुम्मन शेख को सरपंच बनाया। अलगू चौधरी ने सोचा कि आज जुम्मन शेख मुझसे जरूर बदला लेगा किंतु जुम्मन जैसे ही सरपंच के आसन पर बैठा उसके मन में यह विचार आया कि यह आसन धर्म और न्याय का आसन है उसकी वाणी देववाणी होगी अतः उसे सत्य के रास्ते से टलना नहीं चाहिए। जुम्मन ने साहू को यार आए सुनाया कि तुमने बैल के साथ अन्याय और और मानवीय अत्याचार किया है।उसके चारे पानी का ठीक से प्रबंध नहीं किया और उससे कठिन परिश्रम करवाता रहा।जुम्मन ने साहू से कहा कि जब उसने बैल अलगू चौधरी से खरीदा था उस समय बैल बिल्कुल स्वस्थ था । अतः अलगू चौधरी को साहू से पूरी रकम मिलनी चाहिए।उस समय सारे लोग तथा अलगू चौधरी चिल्लाने लगा --- पंच परमेश्वर की जय हो। उस दिन के बाद से जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में फिर से दोस्ती हो गई।